लिए पानी की उपलब्धता के आधार पर, सिंचित स्थितियों में प्रति वर्ष 5 फसलें प्राप्त की जा सकती हैं जबकि वर्षाश्रित स्थितियों में 4 फसलें उगाना संभव है ।

अंतराकृषि

वर्ष में दो बार अधिमान्यत: मनसून के आरंभ में 10 किलोग्राम बीज/एकड़/फसल की दर से हरी खाद फसल को अंतराकृषि के रूप में उगाने की सिफारिश की जाती है । लाल मिट्टी के लिए सनहेम्प (क्रोटेलारिया जंसिया) अनुशंसित है, जबकि काली मिट्टी के लिए ढैंचा (सेसबानिया एक्यूलेटा) की सिफारिश की जाती है। हरी खाद वाली फसलों को बुआई के 30-45 दिन बाद फूल आने से पहले मल्चिंग करनी होती है। बागान की स्थापना के बाद किसानों की आय में वृद्धि के लिए अंतराकृषि के रूप में कम अवधि वाली फसलों (रागी, मूंगफली, लोबिया, कुलथी, पालक, मक्का आदि) की खेती की जा सकती है। अदरक और मिर्च का अंतरशस्यन न करें ।

सलाह

- वृक्षरोपण हेतु 8-9 महीने पुराने पौधों को उपयोग करें ।
- पार्श्व शाखाओं को हटाकर एकल मुख्य प्ररोह को बनाए रखें ।
- आपत्र ऊंचाई ज़मीनी स्तर से 4-5 फीट रखें ।
- 15 किग्रा (2 विभक्त मात्राओं में) की दर से गोबर खाद और 258: 103: 103 ग्राम/पौधा/वर्ष (5 विभाजन) की दर से एन: पी: के का अनुप्रयोग करें ।
- अधिक पत्ती उपज के लिए 40-50 स्वस्थ प्ररोहों को बढने दें ।
- प्रभावी जल प्रबंधन के लिए बगीचे में ड्रिप प्रणाली से सिंचाई करें ।

- मिट्टी की उर्वरता बढाने हेतु मनसून के दौरान फलीदार पौधों का हरी खाद डालें ।
- पत्ती/प्ररोह की कटाई एक वर्ष में -5 बार की जा सकती है ।

तकनीकी लेखा-जोखा

युग्म पंक्ति प्रणाली की तुलना में वृक्ष शहतूत कृषि का तकनीकी-लेखा-जोखा परिकलित करने पर पाया गया है कि पेड़ की खेती में बी:सी अनुपात 1:3.71 है, जबकि युग्म पंक्ति प्रणाली में 1:2.88 है।

विवरण	युग्म पंक्ति प्रणाली	वृक्ष शहतूत कृषि
कुल पत्ती उत्पादन का खर्च (रु.)	3,22,886.4	2,07,628.3
औसतन वार्षिक पत्ती उपज (कि.ग्रा/हे)	55,000	51,000
पत्ती उत्पादन लागत (प्रति कि.ग्रा)	5.87	4.07
कुल कोसा उत्पादन लागत (रु)	4,34,767.7	3,12,798.5
कुल कोसा उत्पादन (कि.ग्रा)	1,787.5	1,657.5
सकल आय (रु)	1,251,250	1,160,250
शुद्ध आय (रु)	8,16,482.3	8,47,451.5
बी.सी अनुपात	2.88	3.71

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें
निदेशक
केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, श्रीरामपुरा, मैसूर 570 008
दूरभाष 0821-2362757,2362406
फैक्स : 0821-2362845
www.csrtimys.res.in csrtimys@gmail.com
csrtimys csrtimys csrtimysore

वृक्ष शहतूत कृषि

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, श्रीरामपुरा, मैसूर 570 008

Copies: 1000 July 2023 Design & Layout: J. Justin Kumar

वृक्ष शहतूत कृषि

शहतूत एक बहुवर्षीय काष्ठीय पौधा है जिसमें पर्याप्त शुष्क सहन क्षमता है। इसलिए छोटे वृक्ष के रूप में इसकी खेती की जा सकती है । उचित अंतराल में पौधरोपण करके निर्दिष्ट आपत्र ऊंचाई(क्राउन हाइट) बनाए रखते हुए जल की कमी की स्थिति में सतत पत्ती उत्पादन कर सकता है । देखा गया है कि शहतूत वृक्ष कृषि आर्द्रता तनाव के प्रति सहनशील है । यंत्रीकरण तथा जल की कमी वाले क्षेत्रों के लिए अनुकूल होने के कारण दक्षिण भारत में वृक्ष के रूप में शहतूत कृषि व्यापक तौर पर अपनाया जा रहा है ।

लाभ

- कृषि में कम लागत और अनुरक्षण करना आसान ।
- कम जल वाले क्षेत्रों में जीवित रहते है और सतत पत्ती उपज देती है ।
- विस्तृत जड़ प्रणाली विकसित होती है और मृदा में गहराई तक पहुंचने के कारण बेहतर पोषक उद्ग्रहण करने में सहायक होता है ।
- विस्तृत अंतराल में वृक्षरोपण करने पर कृषक मौसमी अंतराकृषि करके भूमि का प्रभावी उपयोग कर सकते हैं ।
- निर्दिष्ट ऊंचाई पर मुकुट (क्राउन) बनाए रखने के कारण उचित संवातन और पर्याप्त सूर्य प्रकाश के प्रभाव से पत्ती की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सकती है ।

शहतूत वृक्ष बागान की संस्थापना

शहतूत एक सुदृढ पौधा है और इसे समतल से लेकर विभिन्न स्थलाकृतियों में उगाया जा सकता है । 6.5 से 7.5 तक की पी.एच वाली मृदा शहतूत उगाने हेतु इष्टतम माना जाता है । मनसून पूर्व एक या दो वर्षा मिलने के बाद भूमि की ठीक जुताई की जानी

चाहिए । 8 फीट x 8 फीट (680 पौधा/एकड) या 10 फीट 10 फीट (436 पौधे/एकड) के अंतराल में पौधरोपण किया जाना चाहिए ।

भूमि तैयार करने के बाद 10 मे.टन/एकड की दर से गोबर खाद/रेशम उत्पादन वानस्पतिक खाद/कृमि वानस्पतिक खाद मिट्टी में मिलाया जा सकता है । बागान की चारों तरफ चौड़े बांध बनाकर मृदा आर्द्रता संरक्षण प्रणालियों का अनुपालन किया जाना चाहिए ताकि अपवाह से बचाया जा सके और वर्षा जल रोपे गए क्षेत्र की तरफ बहें । वृक्षारोपण गड्ढा प्रणाली में किया जाना है । अपनाई गई दूरी पर 4 x 4 x 4 (एलबीडी) आकार के हिसाब से गड्ढे खोदने चाहिए। बगीचे की स्थापना होने तक सप्ताह में कम से कम एक बार सिंचाई की जानी है । मुकुट की ऊंचाई भूतल से 4-5 फीट ऊपर रखनी चाहिए ।

बागान का अनुरक्षण

शहतूत वृक्ष बागान की स्थापना के लिए पेड़ों का अनुवर्धन सबसे निर्णायक चरण है। शहतूत के बागानों की उत्पादकता मुख्यत: प्रति पौधे की शाखाओं की संख्या पर निर्भर करती है। मुख्य तने और मुकुट की उचित वृद्धि और प्रति पौधे में 40-50 स्वस्थ मजबूत टहनियों का मुकुट विकसित किए जाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिससे गुणवत्तापूर्ण पत्तियां प्राप्त होती हैं।

रोपण के तुरंत बाद पौधे की पहली शीर्ष कटाई ज़मीन से 4-5 फीट की ऊंचाई पर करें । पहले 9 महीनों के दौरान तने के निचले भाग से उगने वाली सभी अवांछित मुकुलों को हटा दें और शीर्ष पर केवल 3-4 शाखाओं को ही बढने दें । दूसरी छंटाई में 3-4 मुकुलों से युक्त 3-4 शाखाओं को 4-5 फीट की ऊँचाई पर काटें । स्थापना के बाद पहले वर्ष के

दौरान पत्तियां तोड़ने से बचें । 3 महीने के बाद, 5-6 टहनियों का चयन करके 2-3 मुकुल छोड़कर पिछली कटाई के ऊपर तीसरी छंटाई करें । फिर 3 महीने के बाद इसी तरह 10-12 टहनियों का चयन करके 2-3 मुकुलों को छोड़कर चौथी छंटाई करें।

3 महीनों के बाद प्रत्येक शाखा के नीचे 2-3 मुकुलों को छोडकर 20-24 प्ररोहों का चयन करके पांचवीं छंटाई की जा सकती है । यह उचित ऊंचाई लगभग 40-50 प्ररोहों का आसानी से रखरखाव करने की सुविधा प्रदान करती है जिससे गुणवत्तापूर्ण पत्ती की कटाई की जा सकती है।

पोषण प्रबंधन

स्थापना अवधि के दौरान, बेसिन बनाने के बाद 8 किग्रा की दर से गोबर खाद और 86:35:35: ग्राम/पौधा/वर्ष की दर से दो विभक्त मात्राओं में एन: पी: के का अनुप्रयोग करना है। स्थापना अवधि के दौरान ड्रिप प्रणाली या पॉट वाटरिंग के माध्यम से उचित सिंचाई की जानी है । स्थापना के बाद सतत पत्ती उत्पादन और मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए 15 किलोग्राम गोबर खाद और 258:103:103 ग्राम/पौधा/वर्ष की दर से एन:पी:के डालें।

पानी की उपलब्धता और मृदा की स्थिति के आधार पर ड्रिप प्रणाली या कुंड सिंचाई की व्यवस्था की जाए। ड्रिप सिंचाई प्रणाली अपनाने से पारंपरिक पद्धति की तुलना में लगभग 70% पानी बचाया जा सकता है।

बागान की स्थापना करने के बाद उपर्युक्त पोषक तत्व प्रबंधन पद्धतियों को अपनाने पर 4-6 किलोग्राम/पौधा/फसल पत्ती उपज प्राप्त होने की उम्मीद है। शहतूत की खेती के लिए अपनाई जाने वाली दूरी के आधार पर शहतूत की पत्तियों की उपज भी भिन्न हो सकती है। हालाँकि, सिंचाई के